और सैनिक सहायता की। कभी उसने
हैदराबाद में फ्रांसीसी सेना को रखे जाने का
विरोध किया था। किन्तु वह स्वाभिमानी था।
उसने यह अनुभव किया कि फ्रांसीसियों
का यूरोप में विनाश हो सकता, क्योंकि उन्हें
भारत में इनकी स्थिति मजबूत करने के
लिए आवश्यक है। उसने उधार की भारी
आर्थिक सहायता की। फिर भी उन्हें उसकी
की सहायता उपलब्ध हुआ, लेकिन [illegible] फ्रांसीसी व्यवस्थाओं
से भी नहीं उसने ड्यूप्ले ने [illegible]
रणनीति का [illegible] प्राप्त किया। समुद्र पर उनका
उनकी भी [illegible] था तथा बन्दरगाहों की
नाकेबन्दी पहले ही की जा चुकी थी। अन्त में
1758 में मसूलीपट्टम तथा 1760 में वांडिवाश पर
अंग्रेजों का अधिकार हो गया था। कर्नाटक के
तृतीय युद्ध से ही अंग्रेजों का प्रभाव स्थापित हो
गया और दक्षिण भारत में [illegible]
[illegible] की फ्रांसीसियों के हाथ से निकल गए

फिर भी कर्नाटक युद्ध [illegible]
का [illegible] रूप से कर्नाटक के युद्ध में [illegible]
यह युद्ध 1758-1763 तक चला। [illegible]
[illegible] अंग्रेज सेनापतियों के नेतृत्व में [illegible]
को [illegible] बना दिया गया। [illegible]
[illegible] तथा [illegible] आदि सेनापतियों ने इन
अभियानों का नेतृत्व किया। [illegible] 1757 के

क्यूबी की प्राप्ति कनाडा के फ्रांसीसी नियंत्रण से निकल जाने का प्रमाण बन गयी। इस युद्ध मे वुल्फ और सॉण्डर्स ने बहादुरी तथा युद्धकौशल का परिचय दिखलाया। इस प्रकार दो वर्षों के अन्दर ही युद्ध की दिशा England के पक्ष में बदल गयी तथा इसके साथ ही विलियम पिट के पतन की पृष्ठभूमि बन गयी। जॉर्ज III विलियम पिट की लोकप्रियता को बर्दाश्त नहीं कर सका। जब पिट ने स्पेन के साथ युद्ध का प्रस्ताव किया तो जॉर्ज III द्वारा इसे स्वीकार नहीं किया गया। वस्तुतः जॉर्ज III यह जानता था कि पिट त्यागपत्र दे देगा और पिट ने त्यागपत्र दे ही दिया। लेकिन कुछ समय बाद जब अमेरिका के अंग्रेजी उपनिवेशों ने स्वतंत्रता के लिए युद्ध छेड़ दिया तो जॉर्ज III ने पुनः विलियम पिट को ~~प्रधान~~ प्रधान मंत्री बनाया। स्वास्थ्य खराब होने के वजह से पिट कार्य नहीं कर सकता था अतः उसे पदत्याग करना पड़ा तथा 1788 में पिट की मृत्यु हो गयी।

England के प्रति विलियम पिट के योगदान का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। पिट की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि वह परिस्थितियों के बल पर नहीं बल्कि अपनी योग्यता के बल पर प्रसिद्ध हुआ था। पिट ने राजनीति को निष्ठा और ईमानदारी पर आधारित

किया। पिट को जनतांत्रिक पद्धति में आदर विश्वास था। वह सीधे राष्ट्र से अपील करता था फिर भी वह स्वतंत्रता का प्रबल समर्थक था। England की महानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता उसके आस्था के तत्व थे।

विलियम पिट England के उन राजनीतिज्ञों में था जिसके दिमाग में England के साम्राज्य की रूपरेखा स्पष्ट थी। यूरोप में वह सिर्फ सुरक्षा और यथास्थिति चाहता था लेकिन समुद्र पर और समुद्र से बाहर वह England की सर्वोपरिता स्थापित करना चाहता था। ट्रेवेलियन ने स्वीकार किया है कि- "He alone of the British statesman carried the map of the British Empire in his head and in his heart."

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त पिट में कुछ दुर्बलताएँ भी थी। वह महान वक्ता था लेकिन वह दूसरों के विचारों को महत्व नहीं देता था। वह किसी के साथ काम नहीं कर सकता था। उसका आत्मविश्वास इतना ज्यादा था कि वह मंत्रिमंडलीय व्यवस्था को सामूहिक उत्तरदायित्व की परम्परा को आगे बढ़ा नहीं सकता था। उसका

व्यक्तिगत अभिमान अभिजातीय सीमा तक था। वह न तो जॉर्ज के साथ काम कर सकता था और न ही ह्विग पार्टी के साथ। यही कारण था कि उसने ह्विग पार्टी की एकता को विनष्ट कर दिया। वालपोल के समय जो कैबिनेट प्रणाली विकसित हुई थी वह पिछड़ गयी। इसी कारण जार्ज III को अपना व्यक्तिगत शासन स्थापित करने में सहायता मिली। किन्तु जब तक पिट जीवित रहा कोई भी उसकी इन त्रुटियों पर विचार नहीं कर पाया। उसकी सफलताओं की चकाचौंध और उसके व्यक्तित्व की ओजस्विता की तुलना में उसके चरित्र की छोटी-मोटी दुर्बलताएँ महत्वहीन बन कर रह गयी।